सेम.-1 , AEC-1

SEPTEMBER'22
SU MO TU WE TH FR SA
1 2 3
4 5 6 7 8 9 10
11 12 13 14 15 16 17
18 19 20 21 22 23 24
25 26 27 28 29 30

233-132
2022 AUGUST 21 SUN

* तकनीकी हिन्दी क्या है? इसके स्वरूप एवं विकास पर प्रकाश डालें।

उत्तर →

*** भूमिका :-**

सूचना प्रौद्योगिकी आधुनिक युग का सबसे बड़ा वरदान है, जिसे मनुष्य ने अपने परिश्रम और खोजकारी बुद्धि से विकसित किया है। यह ऐसा क्रांतिकारी विज्ञान है, जिसने हमारे जीवन को एकसाथ बड़ी तीव्र गति से बदल दिया है। वास्तव में यह एक शिल्प-विज्ञान है, जिसमें वे सब उपकरण तथा तरीके सम्मिलित हैं जो सूचना के प्रबंधन से संबंध रखते हैं। सूचना को एकत्र किया जाता है, इसका संसाधन किया जाता है, भण्डारण किया जाता है।

वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा से तात्पर्य है भाषा के उस रूप से जिसका संबंध विज्ञान एवं तकनीकी शब्दावली से हो और जो विज्ञान एवं टैक्नोलॉजी के क्षेत्र में अनुप्रयुक्त हो रहा है। वैज्ञानिक एवं तकनीकी भाषा का रूप उपेक्षाकृत नया है, परन्तु यह भाषा को उन्नति के एक नए अनछुए क्षेत्र की ओर मोड़कर अत्यंत उपयोगी सिद्ध कर रही है। भाषा न केवल साहित्य और प्रशासन का प्रभावी माध्यम है, बल्कि वैज्ञानिक एवं तकनीकी विषय-वस्तु को सुगठित रूप में प्रयुक्त करने का सशक्त साधन भी है। विज्ञान की भाषा स्पष्ट, तर्क-संगत एवं सुगठित होती है। तकनीकी शब्दावली एक गतिशील प्रक्रिया है। अपने-आप में इस वैज्ञानिक एवं तकनीकी विशिष्टता में ढालने के लिए भाषा में संस्कृत भाषा की शब्दावली के साथ-साथ अंतर्राष्ट्रीय शब्दावली को भी यथोचित

Success is not final, failure is not fatal: it is the courage to continue that counts. -Winston Churchill

अपनाकर अपनी शब्द-सम्पदा को अत्यंत समृद्ध बना दिया है।

भाषा में आज विज्ञान, गणित, विधि, अंतरिक्ष, दूर-संचार एवं टैक्नोलॉजी से संबंधित अनेक ग्रंथों का निर्माण संभव हो सका है। वैज्ञानिक रूप के साथ तकनीकी रूप को भी भाषा ने इसी प्रकार अपनाकर अपने वैज्ञानिक तथा सर्वसमावेशी होने का प्रमाण प्रस्तुत किया है। भाषा के स्वरूप-निर्धारण की अंतिम कसौटी होती है उसका व्यवहार। तकनीकी भाषा के निर्माण के साथ उसे जनता द्वारा व्यवहृत भाषा के समानान्तर खड़ी करने का प्रयास किया जा रहा है। तकनीकी भाषा का निर्माण करके भाषा को सीमित किया जाता है।

* **परिभाषा :-**

हिन्दी का वह आधुनिक रूप, जिसका प्रयोग विज्ञान और कम्प्यूटर के क्षेत्र में होता है तकनीकी हिन्दी से संज्ञापित होता है। विज्ञान और कम्प्यूटर के बढ़ते दौर में हमारा देश आज विश्व के मंच पर स्थापित हो चुका है। तकनीकी हिन्दी को हम इस रूप में परिभाषित कर सकते हैं- 'तकनीकी विषय की अभिव्यक्ति के लिए जिस भाषा का प्रयोग करते हैं, उसे तकनीकी हिन्दी कहते हैं।'

तकनीकी शब्दावली में तकनीकी शब्दों का प्रयोग करने वाले तकनीकी रूप को रखा जाता है। इनको इसी रूप में स्वीकार कर प्रयोग करना आवश्यक है। जैसे - रॉकेट, कंप्यूटर, टेलीविजन, एंटिना, मोबाईल, टेलीप्रिन्टर, टेलीफोन, माउस, आदि।

All life is an experiment. The more experiments you make the better. -Ralph Waldo Emerson

सामान्य बोलचाल की हिन्दी भाषा के शब्दों का प्रयोग वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षेत्रों में प्रभावशाली ढंग से किया जाता है। तकनीकी हिन्दी में मुद्रित समाचार पत्र, पत्रिकाएँ, पुस्तकें, जर्नल, पम्फलेट, हैंडबिल, पोस्टर आदि की भी गणना की जाती है। इन माध्यमों से आधुनिक संचार माध्यमों की शुरुआत हुई थी।

★ स्वरूप और विकास :-

हिन्दी में तकनीकी स्वरूप की अगर बात की जाए तो यह प्रयास बीसवीं शताब्दी के प्रारंभ से ही दिखने लगते हैं। धीरे-धीरे हिन्दी का मानकीकरण सरकारी सहायता के साथ लगभग पूरा हो गया है। इसके साथ आधुनिकीकरण का दूसरा महत्वपूर्ण पक्ष भाषा के लिए यांत्रिक उपकरणों का विकास है। भाषा के संबंध में यांत्रिक उपकरणों के विकास की प्रक्रिया को स्वाभाविक रूप से दो चरणों में बाँटा जा सकता है-

① कम्प्यूटर पूर्व यांत्रिकीकरण
② कम्प्यूटरीकरण ।

① कम्प्यूटर पूर्व यांत्रिकीकरण -

कम्प्यूटर से पहले यंत्रों का निर्माण किया गया। जिसमें से तीन प्रमुख यंत्रों का निर्माण हुआ - टाइपराइटर, टेलीप्रिंटर और इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटर।

टाइपराइटर :-

भाषा के यांत्रिकीकरण की शुरुआत

Success is stumbling from failure to failure with no loss of enthusiasm. -Winston S. Churchill

टाइपराइटर से होती है। हिन्दी में टाइपराइटर के विकास की प्रक्रिया स्वाधीनता मिलने के एकदम बाद शुरू हुई। यह प्रयास अंग्रेजी टाइपराइटर में ही कुछ सुधार करके किये गए थे तथा रोमन एवं देवनागरी के मूलभूत अंतरों को नजरअंदाज करते थे। इसीलिए डॉ॰ रघुवीर, डॉ॰ बाबूराम सक्सेना, प्रो॰ कृपानाथ मिश्र आदि विद्वानों ने देवनागरी का रूप निश्चित कर कुंजी पटल बनाया।

टेलीप्रिंटर —

उपकरणों के विकास में टेलीप्रिंटर को हिन्दी में दूरमुद्रक का नाम देकर विकसित किया गया। आजादी के बाद संचार माध्यमों में बदलाव आए और संचार के लिए टेली प्रिंटर की मांग बढ़ी। 1960 में संचार मंत्रालय के अंतर्गत 'हिन्दुस्तान टेली-प्रिंटर' नामक उद्यम हुआ। तब तक देवनागरी में कुछ प्रारंभिक टेली-प्रिंटर भारतीय तार विभाग को मैसर्स-आलीवेट कंपनी ने दे दिये थे।

इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटर :—

कुछ ही समय बाद इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटर का विकास हुआ। मैनुअल टाइपराइटर में केवल एक लिपि का टंकण संभव था, जबकि इलेक्ट्रॉनिक टाइपराइटर एकाधिक लिपियों के लिए काम में आता है। इसमें अशुद्धियों को ठीक करने की स्वचालित व्यवस्था

होती है। ऐसे टाइपराइटर हिन्दी में पूर्ण कुशलता से काम कर रहे हैं।

② कंम्प्युटरीकरण :-

वर्तमान समय में हिन्दी के तकनीकी विकास का अर्थ प्राय: कम्प्युटरीकरण से ही लिया जाता है। आज सभी क्षेत्रों में कम्प्युटरीकरण कर कार्य को सरल बनाया गया है। कम्प्युटर का प्रयोग अनिवार्य कर दिया गया है। इसलिए अब प्रयास किया जा रहा है कि हिंदी सहित सभी भारतीय भाषाओं के लिए कम्प्युटर इसी प्रकार काम करे जैसे रोमन लिपि के लिए कर रहा है। अभी तक हिन्दी में अपना सिस्टम सॉफ्टवेयर विकसित नहीं हुआ। हिन्दी व भारतीय अन्य भाषाओं में भी नहीं हुआ है जबकि भारतीय सभी भाषाओं के लिए सॉफ्टवेयर का विकास होना चाहिए।

1977 में हैदराबाद की ईसीआईएल. नामक कंपनी ने फोर्ट्रान नामक कम्प्युटर भाषा में पहली बार हिन्दी को कम्प्युटर पर उतारा। सन 1980 के आस-पास दिल्ली की डी.सी.एम. नामक कंपनी ने 'सिद्धार्थ' नामक मशीन पर 'शब्दमाला' कार्यक्रम तैयार किया। यह हिन्दी-अंग्रेजी द्विभाषी शब्द-संसाधक थी, एवं दोनों भाषाओं में सामग्री संसाधन की सुविधा देती थी। इसी समय हैदराबाद की सीएमसी. नामक कंपनी ने तीन भाषाओं (अंग्रेजी, हिन्दी और एक भारतीय भाषा) में शब्द संसाधन के लिए 'लिपि' नामक मशीन तैयार की।

निष्कर्ष :-

स्पष्ट है कि पिछले कुछ वर्षों में हिंदी के वैज्ञानिक और तकनीकी विकास में कई महत्वपूर्ण चरण हमने पूरे किए हैं। पहली चुनौती हिंदी में वैज्ञानिक शब्दावली के साथ कम्प्यूटर के सिस्टम सॉफ्टवेयर के विकास की है। इसके साथ ही, यह भी एक चुनौती है कि हिंदी में वे सभी सुविधाएँ मौजूद हों जो अभी अंग्रेजी और रोमन के लिए हैं। तकनीकी हिन्दी के विकास की प्रक्रिया निरंतर चलने वाली है। अतः हम कह सकते हैं कि हमें सतत विकास की प्रक्रिया तकनीकी हिन्दी की चलती रहेगी।